अध्याय 9

IDIA45

xlr dky

(300 ईस्वी से 500 ईस्वी)

चित्र–9.1

इस पाठ में हम आज से लगभग 1700 साल पहले की बातें पढ़ेंगे। उस समय तक आते–आते भारत के हर क्षेत्र में लोग खेती करने लगे थे। गाँव सघन होने लगे थे और उनके बीच कई छोटे बड़े शहर भी बस गए थे। इसके साथ इस समय पूरे भारत में अनेक छोटे–छोटे राज्य भी बन गए थे। इन राज्यों का अपना–अपना राजवंश और राजा होने लगा था।

इस काल में छत्तीसगढ़ दक्षिण कोसल के नाम से जाना जाता था। यहाँ पर श्रीपुर(सिरपुर) जैसे प्रमुख वैभवशाली नगर का उदय हो चुका था। दक्षिण कोसल के अंतर्गत वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग, राजनाँदगाँव और उड़ीसा राज्य के संबलपुर जिले आते थे।

इस समय इस इलाके का राजा महेंद्र भी समुद्रगुप्त से पराजित हुआ। समुद्रगुप्त ने महेन्द्र से वार्षिक कर लेकर उसका राज्य वापस कर दिया। उसे स्वतंत्र रुप से राज्य करने दिया।

1. समुद्रगुप्त ने महेन्द्र को उसका राज्य क्यों लौटाया होगा ?
2. दक्षिण कोसल के कुछ प्रमुख स्थानों के नाम बताइए।

चित्र–9.2 सिरपुर से प्राप्त अवशेष

समुद्रगुप्त

इस समय मगध (वर्तमान बिहार राज्य) में गुप्त वंश के राजाओं का शासन था। समुद्रगुप्त इसी राजवंश का एक महत्वपूर्ण राजा था। उसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी (इसे आज पटना कहते हैं)। उन दिनों शक्तिशाली राजा दूसरे राज्यों पर हमला करते थे। वे दूसरे राज्यों को अपने राज्य में मिलाना चाहते थे ताकि उनका अपना राज्य बड़ा हो और उन्हें ज्यादा–से–ज्यादा आमदनी हो। समुद्रगुप्त भी यही चाहता था।

समुद्रगुप्त की प्रशंसा इलाहाबाद के एक स्तंभ (खम्भे) पर शिलालेख के रूप में खुदी हुई है। उस शिलालेख के अनुसार समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त (उत्तर भारत), आटविक राज्य (वनांचल) तथा दक्षिणापथ (दक्षिण भारत) के कई राज्यों को हराया। दक्षिणापथ में जिन राज्यों को उसने हराया उनमें से दो राज्य वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य में थे–दक्षिण कोसल, जिसकी राजधानी सिरपुर थी और महाकांतार, जो वर्तमान बस्तर और उड़ीसा क्षेत्र में था।

समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के राजाओं को हराकर उनके राज्यों को अपने राज्य में मिला लिया। इस तरह उसका राज्य बहुत बड़ा हो गया और वह उत्तर भारत का सबसे बड़ा राजा बन गया। लेकिन उसने दक्षिणापथ के राजाओं को हराने के बाद भी उनका राज्य उन्हें लौटा दिया।

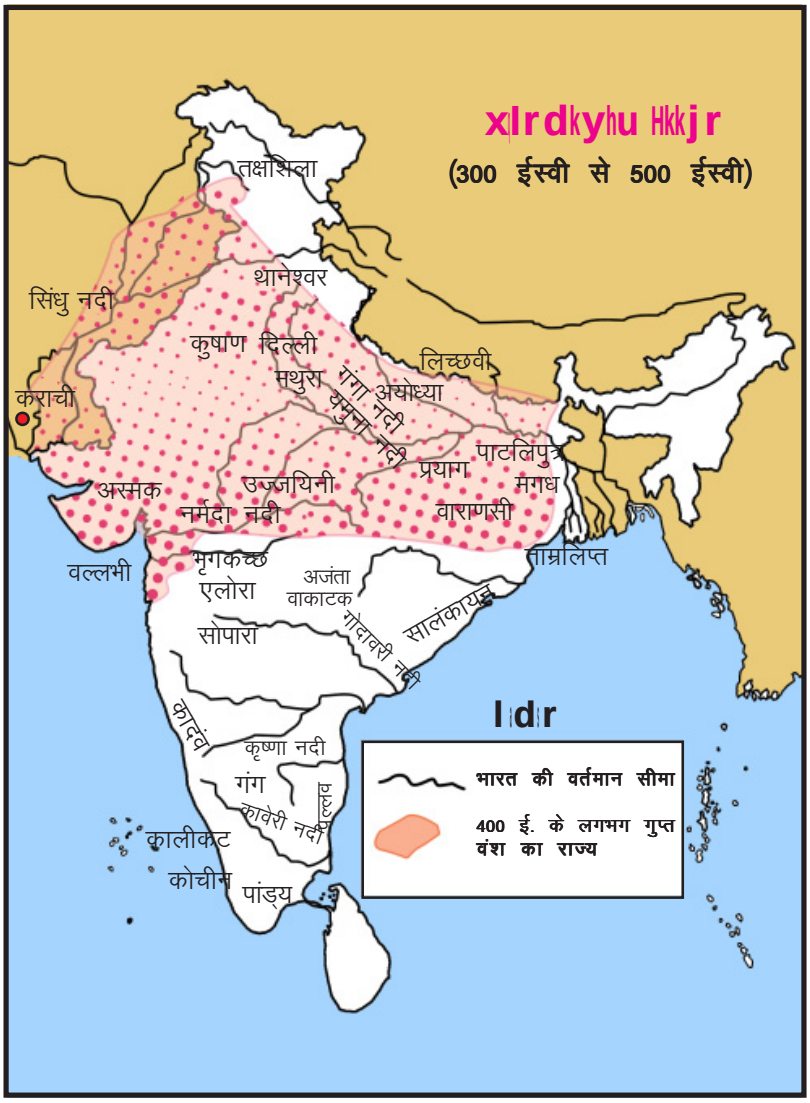

EkkUkfPk«k 9-1

भारतवर्ष के मानचित्र 9.1 में उत्तर तथा दक्षिण के राज्यों को पहचानिए और बताइए कि समुद्रगुप्त का राज्य कहाँ–से–कहाँ तक था और उसकी राजधानी कहाँ पर थी ?

कक्षा में चर्चा कीजिए कि समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के राज्यों को अपने राज्य में क्यों मिला लिया किन्तु उसने दक्षिण के राज्यों को नहीं मिलाया।

समुद्रगुप्त न केवल योद्धा था बल्कि कलाप्रेमी भी था। उसके समय में ढाले गए सोने के कुछ सिक्कों में उसे वीणा बजाते हुए दिखाया गया है। समुद्रगुप्त के बाद उसका बेटा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य राजा बना। उसने भी उत्तर भारत में अपने राज्य का विस्तार किया उसने दक्षिण के कुछ महत्वपूर्ण राजाओं से दोस्ती की। उसका राज्य बंगाल से गुजरात तक फैला हुआ था।

गुप्त राज्य कई प्रांत या भुक्ति में बँटा था और हरेक प्रांत कई जिलों या विषयों में बँटा था। इनका प्रशासन वहीं के स्थानीय लोग करते थे और राजा केवल कुछ महत्वपूर्ण बातों पर उन्हें आज्ञा देता था। गाँव का प्रशासन गाँव के महत्वपूर्ण लोगों की सभा करती थी। इस प्रकार गुप्त साम्राज्य के प्रशासन में स्थानीय लोगों की अधिक भूमिका थी।

इन राजाओं के अतिरिक्त गुप्तवंश में अन्य कई महत्वपूर्ण राजा हुए जिनमें कुमारगुप्त और स्कंदगुप्त प्रसिद्ध हैं। इस वंश का शासन लगभग 500 ई. तक चलता रहा। भारतीय विज्ञान, कला और धर्म की प्रगति के लिए यह काल बहुत महत्वपूर्ण है। इस काल में लोगों के जीवन में भी बहुत बदलाव आया।

XkIRkdkYk Ek YkkXkksa dk TkhOkUk

उन दिनों लोगों का जीवन कैसा था? यह हमें कैसे पता चल सकता है? उन दिनों बहुत सी पुस्तकें लिखी गईं– जो धर्म, कहानी, नाटक और विज्ञान से संबंधित थीं। उनको पढ़कर हम उन लोगों के बारे में बहुत कुछ जान पाते हैं। इसके अलावा उस समय कई शिलालेख खुदवाए गए थे। उनसे भी हमें कई जानकारियाँ मिलती हैं। उन दिनों चीन से कई यात्री भारत आए थे। वे लोग बौद्ध धर्म को मानते थे। इसलिए बौद्ध पुस्तकों को पढ़ने और बुद्ध से संबंधित स्थानों को देखने के लिए भारत आते थे। उनमें से एक थे, फाह्यान जिन्होंने अपनी यात्रा के अनुभवों का विवरण अपनी पुस्तक में लिखा है। उससे भी हमें भारत के बारे में कई बातों की जानकारी मिलती है।

फाह्यान ने लिखा है – यहाँ के लोग धनी और सुखी हैं। उन पर लगान का अधिक बोझ नहीं है न ही उन पर शासकीय रोक–टोक है। यहाँ के लोग किसी जीव की हत्या नहीं करते हैं, शराब नहीं पीते हैं। प्याज या लहसुन को केवल चांडाल खाते हैं। बौद्धों के कई मठ हैं जिन्हें घर, बगीचे, कृषक और बैल सहित खेत दिए गए हैं।

भारत में मठों का बहुत सम्मान था। मठों को खेतिहर जमीन दान में दी जाती थी। मठों में रहने वाले साधु खुद अपने खेतों में काम करते थे। भारत में लोग अहिंसा में विश्वास करते थे। भारतीय लोग बहुत बड़े–बड़े यज्ञों का आयोजन करते थे। भारतीय लोग शाकाहारी भोजन को पसंद करते थे।

भारत में ही लिखी गई दूसरी पुस्तकों से पता चलता है कि फाह्यान के कुछ कथन पूरी तरह सही नहीं हैं। दूसरे ग्रंथों से पता चलता है कि समाज में जातिप्रथा और छुआछूत का भेदभाव था।

शहरों में ऊँचे वर्ग के लोग सुसंस्कृत जीवन बिताते थे। वे कविता, नाटक, संगीत, नृत्य, चित्रकला और मूर्तिकला में विशेष रुचि रखते थे। उन्हीं दिनों उच्च वर्गों की महिलाओं पर कई तरह के रोक लगने लगे। बाल विवाह (छोटी उम्र में शादी करना) और सतीप्रथा (विधवाओं को मरे हुए पति के साथ जलाना) आदि कुरीतियाँ शुरू हो रही थी। शहरों में गरीबों की हालत भी कठिन होती जा रही थी। उन दिनों दूर देशों से व्यापार कम हो रहा था और इसके कारण उद्योग धंधे मंद पड़ रहे थे। लोग काम के अभाव में शहर छोड़कर गाँव में जाकर बसने लगे। इससे बड़े शहर छोटे होने लगे थे।

उस समय के शिलालेखों व पुस्तकों से यह भी पता चलता है कि राजा, ब्राह्मणों, मठों व बौद्ध विहारों को गाँव–के–गाँव दान में दे देते थे। दान प्राप्त करनेवाले लोग उनमें किसानों से खेती करवाते थे और उससे मिली आय से अपना काम चलाते थे।

1. गुप्त काल में शहरों में काम का अभाव क्यों हो रहा था ?
2. क्या आज भी पुरुषों की तुलना में महिलाओं पर अधिक रोक–टोक है ?
3. राजा ब्राह्मणों व मठों को दान में पैसे न देकर गाँव क्यों दिए होंगे ?

धर्म

गुप्त काल कई धार्मिक विचारों के मेलजोल और परिवर्तन का समय था। वैदिक धर्म ने बौद्ध व जैन धर्मों की कई बातों को अपनाया। अब वैदिक धर्म में भी अहिंसा पर जोर दिया जाने लगा। वैदिक धर्म ने कई छोटे संप्रदायों की बातों को अपनाया। जैसे शिव, देवी, विष्णु की पूजा आदि। अब पुराने वैदिक देवता जैसे इन्द्र, अग्नि या वरुण को लोग कम महत्व देने लगे थे। अब यज्ञों की जगह देवी–देवताओं की मूर्तियाँ व मंदिर बनाकर पूजा–अर्चना करना लोकप्रिय होने लगा। पुराने समय के यज्ञ आदि खर्चीले धार्मिक रिवाजों की जगह पूजा, व्रत और दान की सरल विधियों के प्रचलन से गरीब तबके के लोग भी धार्मिक क्रियाओं में भाग लेने लगे। गुप्त राजा खुद तो वैष्णव धर्म को मानते थे किन्तु उनके शासन काल में सभी लोगों को अपना–अपना धर्म मानने की स्वतंत्रता थी।

विज्ञान

गुप्त काल के सबसे प्रमुख खगोलशास्त्री और गणित के विद्वान आर्यभट्ट थे। आर्यभट्ट ने सन् 499ई. में "आर्यभट्टीयम्" की रचना की, जिसमें उन्होंने कई जटिल गणितीय सवालों का निदान दिया। उन्होंने यह भी बताया कि पृथ्वी गेंद की तरह गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है। ग्रहण के बारे में आर्यभट्ट ने कहा कि यह पृथ्वी और चंद्रमा की परछाईं के कारण होता है न कि राहु–केतु के निगलने से। इन बातों को उनके समय में कम लोगों ने ही स्वीकार किया था।

इस काल के एक और प्रमुख वैज्ञानिक वराहमिहिर थे। इन्होंने खगोलशास्त्र और फलित ज्योतिष (भविष्य बताने का काम) को जोड़ने का प्रयास किया। आधुनिक विज्ञान ने पृथ्वी के संबंध में जानकारी के लिए आर्यभट्ट को ही सही सिद्ध किया है। इस समय चिकित्सा, खासकर पशुओं की चिकित्सा और खेती पर कई पुस्तकें लिखी गईं।

लोगों ने आर्यभट्ट की बातों को क्यों नहीं माना होगा ?

साहित्य

IDS65S

गुप्त काल में संस्कृत भाषा में उच्च कोटि के साहित्य रचे गए। संस्कृत साहित्य के महान कवि जैसे कालिदास, भारवि, शूद्रक, माघ इसी काल में हुए थे। कहा जाता है कि विष्णुशर्मा ने पंचतंत्र की प्रसिद्ध कहानियाँ भी इसी काल में लिखी थी तथा नारायण पंडित ने हितोपदेश की रचना की थी। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य का दरबार अपने नौ रत्नों के लिए प्रसिद्ध था, इनमें सबसे प्रमुख कालिदास थे। कालिदास की प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं मेघदूतम् और कुमारसंभवम्। उनका अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक विश्वप्रसिद्ध है। इस समय के साहित्य में प्रमुख रूप से मनुष्यों की भावनाओं व समस्याओं का व्यापक वर्णन है।

कक्षा में पंचतंत्र की कुछ कहानियाँ सुनाइए।

चित्रकला एवं वास्तुकला

साहित्य तथा विज्ञान की तरह ही इस काल में विभिन्न प्रकार की कलाएँ जैसे चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, संगीत, नाट्यकला, आदि के क्षेत्र में प्रगति हुई। अजंता की गुफाओं के भित्ति चित्र इस युग की चित्रकला के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। ये चित्र महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित कहानियों पर आधारित हैं। ये इतनी कुशलता से बनाए गए हैं कि अभी भी सजीव दिखाई पड़ते हैं।

दीवारों पर बनाए गए चित्र को भित्ति–चित्र कहते हैं।

चित्रकला के साथ–साथ इस युग में अनेक मंदिर, गुफा, चैत्य, विहार, स्तूप आदि बनाए गए। इस काल में मूर्तिकला के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति हुई। इस समय बड़ी संख्या में विष्णु, शिव, बुद्ध और जैन तीर्थंकरों की मूर्तियों का निर्माण हुआ। इस समय की मूर्तियों में भावनाओं को व्यक्त करने की शुरुआत हुई थी ।

चित्र–9.3 भीतरगाँव में बना विष्णु मंदिर, कानपुर (उ.प्र.)

गुप्त राजाओं के समय में बड़ी संख्या में मंदिरों, चैत्यों, विहारों व स्तूपों का निर्माण हुआ। ये मंदिर ईंट और पत्थरों से बनाए जाते थे। कुछ बौद्ध विहार व मंदिर पहाड़ियों को काट कर बनाई गई गुफाओं के रूप में थे। गुप्त काल में सारनाथ में विशाल बौद्ध विहार बना। झाँसी स्थित देवगढ़ का दशावतार मंदिर व विदिशा स्थित उदयगिरी की गुफाएँ इसी समय की बनी है। कानपुर के पास भीतरगाँव में बना विष्णु मंदिर संसार में ईंटों से बना सर्वाधिक पुराना मंदिर है।

छत्तीसगढ़ में गुप्त कालीन कला

इसी तरह ईटों से बने वास्तु कला की एक अनुपम कृति छत्तीसगढ़ में भी है। यह है सन 650 ई. के आसपास का बना सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर। यह राजधानी रायपुर से लगभग 79 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसका शिखर भीतरगाँव के मंदिर के शिखर से काफी मिलता–जुलता है। भीतरगाँव की तरह यहाँ भी पौराणिक दृश्यों का अंकन तथा चौखट, प्रवेशद्वार आदि पर अलंकरण किया गया है। इससे पता चलता है कि छत्तीसगढ़ में भी गुप्त कालीन कला का प्रभाव था। आज भी माघ पूर्णिमा एवं बुद्ध पूर्णिमा के पर्व पर सिरपुर में मेला लगता है।

चित्र–9.4 लक्ष्मण मंदिर सिरपुर (छत्तीसगढ़)

अभ्यास के प्रश्न

(अ) जोड़ी मिलाइए–

क	ख
समुद्रगुप्त	चीनी यात्री
सिरपुर	ज्योतिषी
फाह्यान	महान योद्धा
वराहमिहिर	दक्षिण कोसल

(ब) प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. पंचतंत्र के लेखक का नाम क्या है ?
2. आर्यभट्ट की पुस्तक का नाम क्या है।
3. अजंता की गुफाएँ क्यों प्रसिद्ध हैं।
4. भीतरगाँव का मंदिर किस सामग्री का बना हुआ है।
5. किसने कहा कि पृथ्वी स्थिर नहीं है और अपनी धुरी पर घूमती है।
6. समुद्रगुप्त ने छत्तीसगढ़ के राजाओं के साथ कैसा व्यवहार किया ?
7. गुप्त साम्राज्य के प्रशासन की विशेषता क्या थी ?
8. गुप्त काल के समाज में आपको कौन–सी बातें अच्छी लगीं ?
9. गुप्त काल के धर्म में ऐसी क्या बात थी जो गरीबों को अच्छी लग सकती थी ?
10. समुद्रगुप्त ने दूसरे राज्यों पर अधिकार करने के लिए कौन–सी नीति अपनाई थी ?

(स) योग्यता विस्तार –

1. सिरपुर के संबंध में अधिक जानकारी एकत्रित कीजिए ।
2. अपने गाँव/शहर में स्थित मंदिरों में से किसी एक की वास्तुकला की विशेषताओं का पता लगाइए?